पाठ-8

बाथरूम की फिसलन

- डॉ. संतोष कुमार तिवारी

आइए सीखें

■ व्यंग्य विधा से परिचय ■ प्रत्यय ■ विलोम शब्द ■ पर्यायवाची शब्द।

आप यह न समझें कि मैं परसाई के 'वैष्णव की फिसलन' की तर्ज पर 'बाथरूम की फिसलन' लिख रहा हूँ। दरअसल यह भुक्तभोगी का 'दर्द-ए-बयाँ' है। न जाने वह कौन-सी घड़ी थी कि सबेरे ही बाथरूम की सीढ़ी पर फिसलकर अपने दाहिने पैर की हड्डी तुड़वा बैठा। वैसे फिसला बाँया पैर था, लेकिन चोट आई दाहिने पैर में। इस दुनिया में ऐसा ही होता है कि अपराधी कोई हो और सजा किसी को मिले। मुझे बड़ा क्रोध आया।

लोगों ने पूछा, ''क्यों, बाथरूम में ज्यादा काई लग गई थी क्या?''

मैंने कहा, ''मेरा बाथरूम इतना साफ है कि देख लोगे तो गर्मी की दोपहर में वहीं घंटों बैठे रहोगे।''

एक दूसरे मित्र ने आकर दुख व्यक्त किया, ''यार, अपने ही घर में हड्डी तुड़वा बैठे, बड़ा दुख हुआ!'' मैं समझ गया वे व्यंग्य कर रहे हैं।

मैंने उन्हें समझाया, ''भाई मेरे, किसी दूसरे के घर जाकर अथवा सड़क पर हड्डी तुड़वाने से बेहतर है कि घर में ही टूट जाए।''

मेरे एक साहित्यिक मित्र आए और कहने लगे, ''अक्सर व्यंग्यकार और साहित्यकार बाथरूम में फिसलते ही हैं। परसाई कुछ साल पहले फिसल गए थे; और कुछ माह पहले डॉ. रामकुमार वर्मा भी। तुम अपने व्यंग्यों में दूसरों को गिराते हो, इसलिए खुदा तुम्हें बाथरूम में गिराता है।'' मैं उनकी बात सुनकर चुप रह गया था, क्योंकि समझ नहीं पा रहा था कि वे मेरी प्रशंसा में कह रहे हैं या निंदा में। बड़े आदमियों के साथ अपने नाम को जुड़ता देखकर मैं मन-ही-मन बहुत खुश हुआ; और सोचा कि परसाई की तरह मैं भी अपनी टूटी टाँग को साहित्य में 'कैश' करूँगा यानी इस पर इतना लिखूँगा

शिक्षण संकेत

▸ व्यंग्य में छिपे सत्य को स्पष्ट करें ▸ प्रस्तुत व्यंग्य के अतिरिक्त अन्य व्यंग्य पढ़कर सुनाएँ तथा छात्रों से भी वाचन कराएँ ▸ व्यंग्य निबन्ध के महत्व से परिचित कराएँ ▸ पाठ में आए कठिन शब्दों को छात्रों से लिखवाएँ ▸ कठिन शब्दों के अर्थ बताएँ ▸ पर्यायवाची शब्दों का ज्ञान दें।

कि शोहरत और दौलत-दोनों मिलें।

चूँकि मेरा व्यवसाय अध्यापन है, इसलिए हमदर्द छात्र-छात्राओं ने भी अपने को पीछे नहीं रखा। एक छात्रा ने आकर बड़े भोलेपन से पूछा, ''क्यों सर, एक ही पैर में लगा है क्या?''

मैंने तुरंत फरमाया, ''गनीमत है, फिलहाल तो एक में ही लगा है।''

मेरी पत्नी ने झल्लाते हुए कहा, ''तुम्हारी क्या मंशा है, दोनों में लगना था क्या?''

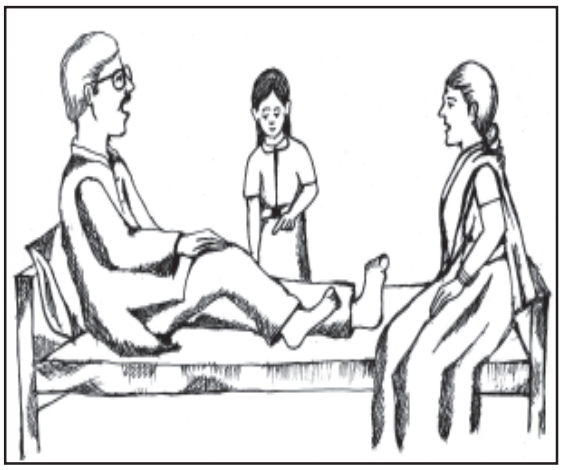

मेरे ठहाके के बीच बात आई-गई हो गई!

यों तो फिसलन वैसे भी अच्छी बात नहीं है। यह तो गनीमत थी कि प्रौढ़ अवस्था में मेरा पैर फिसला। वह भी बाथरूम में। नदी में पैर फिसल जाए तो संभव है आदमी लहरों के हवाले हो जाए। मैंने सोचा गनीमत है यानी प्रभु ने मुझे खूब बचाया। मेरे आस्तिक मित्र यही समझते रहे कि ईश्वर ने किसी बड़ी घटना से आपको बचाया है, वरना कुछ भी अनहोनी हो सकती थी। मैं उन कर्म-परायण व्यक्तियों से यही कहता रहा कि मुझे खुदा ने रियायत कम दी, क्योंकि दो चार दिन की परेशानी देकर वह मुझे तीन माह के प्लास्टर से बचा सकता था। इस तरह मैं अपनी टूटी हड्डी लेकर दिल बहलाता रहा।

मैंने पोर्टेबल टी.वी. तो सुना था, लेकिन पोर्टेबल 'एक्स-रे' नहीं। हड्डी के टूटने से मेरे जनरल नॉलेज मे इज़ाफा हुआ। मैंने अपने डॉक्टर मित्र को पोर्टेबल एक्स-रे मशीन के साथ आते देखा। पेंच-पुर्जे जमाते देखा; और कुछ क्षणों के लिए मन-ही-मन अपने को वी.आई.पी. समझा। प्रभावशाली इष्ट-मित्रों के सहयोग से और डॉक्टर के सौजन्य से कच्चा और पक्का प्लास्टर घर पर ही हुआ। दोनों बार मेरे मित्र और शिष्य इर्द-गिर्द रहे। मैंने डॉक्टर से ज्यादा एक दर्जन मित्रों को देखा। मेरा प्लास्टर साहित्यिक वातावरण में हुआ; और अस्पताल के दुर्गंधमय वातावरण से ईश्वर ने मुझे बचाया। प्लास्टर के दौरान एक मित्र ने कहा, ''और लिखो व्यंग्य दूसरों पर। ईश्वर ने तुम्हें भी चोट दी।''

मैंने उत्तर दिया, ''मैंने तो लोगों को मानसिक आघात दिए थे, लेकिन ईश्वर ने मुझे शारीरिक चोट क्यों दी?''

दूसरे मित्र ने फरमाया, ''डॉक्टर साहब, अगर एनस्थीसिया की ज़रूरत हो तो यहाँ कई कवि मौजूद हैं। कविताएँ शुरू करा दें। मरीज बेहोश हो जाएगा और प्लास्टर आराम से बँध जाएगा।''

लोगों की राय यह थी कि यदि कवियों को कुछ समाजोपयोगी बनाना है, तो अस्पताल में उनकी ड्यूटी लगाई जाए। वे ऑपरेशन कक्ष में मरीज को कविताएँ सुनाकर आवश्यकतानुसार ऑपरेशन के समय बेहोश करें, किन्तु इस समय निर्णय में यह परेशानी है कि कवियों के भाव बहुत बढ़ जाएँगे और वे डॉक्टर

की फीस से ज्यादा पैसे लेने लगेंगे।

मित्रों ने मुझे कई बार समझाया कि तीन माह बिस्तर पर पड़े रहोगे तो अपने आप संत और ऋषि बन जाओगे। किसी ने कहा, ''राम का नाम लेना शुरू करो, सारे पाप धुल जाएँगे।'' दूसरे ने समझाया कि एक उपन्यास लिख डालो, तो शायद जितना आर्थिक नुकसान हुआ है, वह रॉयल्टी से वसूल हो जाएगा। मैंने यह तो नहीं किया, लेकिन उन तमाम स्थानीय कवियों की रचनाएँ इस बीच सुनता रहा; और सहता रहा, जिन्हें शायद कभी एक-दो कविताएँ सुनने के बाद पास नहीं फटकने देता था। मालूम नहीं, यह मेरी मजबूरी थी या उनका सौभाग्य था। मैंने डॉक्टर से 'स्लिम-फास्ट' के लिए सलाह माँगी। उसका कहना था कि मेरे मरीज का वजन बढ़ता ही है, घटता नहीं। मैं चुप हो गया। एकांत में कभी मैं अपने आप पर खीझता कि ऐसी भी क्या लापरवाही कि बाथरूम में गिर पड़े। कभी नियति को कोसता। कभी ईश्वरवादी बनकर कष्ट-निवारण के लिए आत्म-निवेदन करता। इस बीच दो-चार व्यंग्य और समीक्षाएँ जरूर लिख पाया, लेकिन उपन्यास की बात दिल में रह गई। इसकी वजह यह है कि एक साथ शारीरिक, मानसिक और आर्थिक-पीड़ा की चपेट में आकर लिखने का दु:साहस एक मास्टर नहीं कर पाता। हाँ, छात्रों को परीक्षा के समय यदा-कदा पढ़ाने की चेष्टा जरूर करता रहा। इन दिनों मेरा लीवर मुझ पर खुश था, क्योंकि मैं बहुत कम खाता था।

बिस्तर पर लेटे-लेटे ही मैं दार्शनिक हो गया। मैंने अपने कई साथियों से कहा, ''यार, हड्डी टूटती-जुड़ती रहती है। असल बात यह है कि आदमी के भीतर का मनोबल न टूटे।'' मैं इस तरह के फलसफे से मानवीय संकल्पों की दुहाई देता और आदमी के अपराजेय संघर्ष की बात करता। मुझे नहीं मालूम कि मैं अपने को बहला रहा था या हर सामने वाले को गुमराह कर रहा था। हाँ, एक बात इस बीच जरूर हुई-जब बाहर से कोई मित्रबंधु मुझे देखने आते, मैं बहुत खुश होता कि मुझे चाहने वालों की कमी नहीं है। चूँकि एक पत्रकार मित्र ने यह हादसा समाचार-पत्र में दे दिया था, इसीलिए मैं जानने की कोशिश करता कि समाचार पढ़कर कितने लोग देखने के लिए आए। दरअसल दर्द में आदमी आनेवाले हमदर्दों का पूरा रिकॉर्ड रखता है और न आने वालों का मानसिक लेखा-जोखा बना लेता है। यहाँ ओढ़ी हुई दार्शनिकता काम नहीं देती और हड्डी टूटने का ध्यान बराबर बना रहता है। मेरा फलसफा सुनकर मेरे एक मित्र ने कहा कि 'दर्द सबको माँजता है।' आप भी उच्चतर भावभूमि पर पहुँच रहे हैं। मैंने कहा कि इस पंक्ति के रचयिता तो मृत्युलोक छोड़ चुके हैं। कम-से-कम तुम मेरा कमरा छोड़कर मुझे दैनिक क्रियाओं के लिए मुक्त करो। वे ठहाका मारकर चले गए; और मैं अपने भारी-भरकम शरीर की टूटी हड्डी और इक्कीसवीं सदी के काल्पनिक चित्र अपने दिमाग में सँजोने लगा।

शब्दार्थ

भुक्तभोगी=जिसने भोगा है, जिसे अनुभव हुआ हो। **कैश**=भुनाना। **शोहरत**=प्रसिद्धि। **गनीमत**=कम-से-कम। **रियायत**=छूट। **जनरल नॉलेज**=सामान्य ज्ञान। **इजाफा**=वृद्धि। **एनस्थीसिया**=बेहोश करने की दवा। **रॉयल्टी**=पुस्तक के लेखक को मिलने वाली राशि। **समीक्षाएँ**=पुस्तक के गुण-दोष और महत्व बताना। **दार्शनिक**=संसार और परमात्मा के संबंध में जो विचार करता है। **अपराजेय**=जिसे जीता नहीं जा सकता। **फलसफा**=दर्शन। **पोर्टेबल**=जिसे आसानी से इधर-उधर ले जाया जा सके। **रिकॉर्ड**=अभिलेख, लिखित वर्णन।

अनुभव विस्तार

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. (क) सही जोड़ी बनाइए—

- प्रौढ़ – आघात
- मानसिक – निवारण
- लेखा – अवस्था
- कष्ट – जोखा

(ख) दिए गए शब्दों में से उपयुक्त विकल्प चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

- बड़े आदमियों के साथ अपने नाम को जुड़ता देखकर मैं मन-ही-मन.....हुआ।(खुश/दुखी)
- मालूम नहीं, यह मेरी मजबूरी थी या उनका..... था। (सौभाग्य/दुर्भाग्य)
- मेरा लीवर मुझ पर खुश था क्योंकि मैं बहुत..... खाता था। (कम/ज्यादा)
- यहाँ ओढ़ी हुई ..... काम नहीं देती, और हड्डी टूटने का ध्यान बराबर बना रहता है। (दार्शनिकता/भौतिकता)

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में दीजिए—

(क) 'अपराधी कोई हो, और सजा किसी को मिले' का आशय लिखिए।

(ख) टूटी टाँग को साहित्य में 'कैश करूँगा' इसका क्या आशय है?

(ग) लेखक अपने कष्टों के निवारण के लिए किससे आत्म निवेदन करता है?

(घ) तीन माह बिस्तर पर पड़े रहकर लेखक ने कौन-कौन सी रचनाएँ की?

(ङ) लेखक को मित्र ने राम नाम लेने की सलाह क्यों दी?

लघु उत्तरीय प्रश्न

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन-से-पाँच वाक्यों में दीजिए—

(क) 'अक्सर व्यंग्यकार और साहित्यकार बाथरूम में फिसलते हैं' इस संबंध में लेखक ने किन-किन साहित्यकारों ने उदाहरण दिए हैं?

(ख) हड्डी के टूटने पर लेखक के जनरल नॉलेज में इजाफा किस प्रकार हुआ?

(ग) कवियों के समाजोपयोगी होने का अर्थ समझाइए।

(घ) 'आदमी के भीतर का मनोबल न टूटे'। व्यंग्य के इस केन्द्रीय भाव को समझाइए।

(ङ) 'दर्द सबको माँजता है।' का आशय समझाइए।

भाषा की बात

4. निम्नलिखित शब्दों का शुद्ध उच्चारण कीजिए—

व्यंग्य, प्रौढ़, सौजन्य, समीक्षा, संकल्प, संघर्ष

5. निम्नलिखित शब्दों की शुद्ध वर्तनी लिखिए—

प्रभू, अध्यन, प्रभावसाली, व्यंग, साहितयिक

ध्यान से पढ़िए

मोहन अपनी बुराई की कमाई छोड़कर बढ़िया सी लिखावट का सहारा लेकर अपनी जीविका चलाने लगा। बच्चों के लिए अब उसकी घबराहट कम हो गई थी। भूखा-प्यासा परिवार अमीरी की ओर स्थाई रूप से चल पड़ा था।

उपर्युक्त गद्यांश में रेखांकित बढ़िया, घबराहट, लिखावट तथा कमाई आदि शब्दों में क्रमशः इया, आहट, आवट तथा ई प्रत्यय लगे हैं। जैसे-

बढ़ + इया = बढ़िया

लिख + आवट = लिखावट

घबरा + आहट = घबराहट

कमा + आई = कमाई

जिन प्रत्ययों को क्रिया के बाद लगाया जाता है उन्हें 'कृत' प्रत्यय कहते हैं यथा-इया, आवट, आहट और आई। कृत प्रत्ययों से बनने वाले शब्दों को कृदन्त कहते हैं, यथा-बढ़िया, लिखावट, घबराहट और कमाई।

इन पर भी ध्यान दीजिए—

बुरा + आई	=	बुराई
भूख + आ	=	भूखा
प्यास + आ	=	प्यासा
अमीर + ई	=	अमीरी

जिन प्रत्ययों को संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण के अंत में लगाकर नए शब्द बनाए जाते हैं उन्हें 'तद्धित' प्रत्यय कहते हैं, जैसे-आई, आ तथा ई।

6. निम्नलिखित शब्दों में से प्रत्यय छाँटकर लिखिए—

पढ़ाई, बुनाई, मिलावट, कसावट, सजावट, तकिया, छलिया, चहचहाहट, शिवा, मिठाई, सफाई, गरीबी, जोड़ी, खेती, शहरी, चिल्लाहट, डिबिया, चिकनाहट, पूरा, चूरा।

7. निम्नलिखित शब्दों के आगे जो शब्द उसका पर्याय नहीं हो उस पर गोला लगाइए—

- मित्र – दोस्त, बंधु, सखा।
- नदी – सरिता, तटिनी, तरिणी।
- ईश्वर – देवालय, ईश, प्रभु।
- घर – सदन, गृह, गगन।
- इच्छा – आकांक्षा, मनोरथ, मनोरम।

8. निम्नलिखित शब्दों में हिन्दी (तत्सम, तत्भव) और आगत (उर्दू, अंग्रेजी) शब्द छाँटकर लिखिए—

वैष्णव, दुनिया, मित्र, साफ, डॉक्टर, बाथरूम, घर, संकल्प, सौभाग्य, शोहरत, दौलत, गर्मी, एक्स-रे, हाथ, आर्थिक, अपराधी, मजबूरी, साहित्य, खुदा, पोर्टेबल-टी.वी., रॉयल्टी, काम, हड्डी

अब करने की बारी

- हिन्दी के अन्य व्यंग्यकारों की रचनाओं को खोजकर पढ़िए।
- हड्डी टूटने पर आप क्या प्राथमिक उपचार करेंगे? चर्चा कीजिए।

❑❑

विविध प्रश्नावली-1

प्रश्न-1 सही जोड़ी बनाइए—

- मंगल – आंदोलन
- असहयोग – कामनाएँ
- राजेन्द्र सिंह – उर्वरा शक्ति
- धरती की – मैगसेसे सम्मान

प्रश्न-2 सही विकल्प चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

अ. मैं ----------तुझे था तब कुंज और वन में। (पुकारता/ढूँढता)

ब. भूमि के भीतर जो जल है, उसे हम अनेक विधियों द्वारा ------- कर सकते हैं। (संरक्षित/दोहित)

स. निर्मला ---------- सा मुख लिए कमल को साथ लेकर स्कूल चली गई। (उदास/पुलकित)

द. महिमा महान् तू है, गौरव -------- तू है। (प्रधान/निधान)

इ. चौरी-चौरा नामक स्थान में ------- घटना घटी। (सनसनीपूर्ण/उत्तेजक)

प्रश्न-3 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में दीजिए—

क. आधी छुट्टी के समय कमल ने माँ से निर्मला की कौन-सी शिकायत की?

ख. कवि जनम-जनम भर किसकी वन्दना करने की बात कहता है?

ग. जल स्रोतों के सूख जाने पर हम क्या कहने को विवश हो जाएँगे?

घ. मदनमोहन मालवीय जी ने किन समाचार पत्रों का संपादन किया था?

ङ 'वृक्ष निभाता रिश्ता नाता' कविता किस कवि ने लिखी है?

प्रश्न-4 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन से पाँच वाक्यों में दीजिए—

क. भू-जल स्रोतों के अंधाधुंध दोहन से क्या हानियाँ हो रही हैं?

ख. 'रामलाल का परिवार' एकांकी में नई पीढ़ी के किस दायित्व की ओर संकेत किया गया है?

ग. भाई-बहन के प्रेम के किस दृश्य को देखकर सावित्री मन्त्र-मुग्ध सी रह गई?

घ. ''जो संस्कृति अभी तक, दुर्जेय-सी बनी है।'' पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

ङ मदनमोहन मालवीय जी बच्चों की आरम्भिक शिक्षा की ओर अधिक ध्यान देना क्यों चाहते थे?

प्रश्न-5 निम्नलिखित शब्दों के मानक रूप लिखिए—

जनम, भगत, माखी, चरन, धरम

प्रश्न-6(क) निम्नलिखित शब्दों की वर्तनी शुद्ध कीजिए —

कठनाई, रिण, साहितयिक, अध्यन, हरयाली, आर्शीवाद

(ख) निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

जल संरक्षण, जाति-पाँति, बड़े-बूढ़े, कहा-सुनी, पारिवारिक, भुक्तभोगी

प्रश्न-7(क) निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए—

आँख, आकाश, हवा, फूल

(ख) निम्नलिखित विलोम शब्दों की सही जोड़ी बनाइए—

अमृत, उत्थान, गरीब, दानव, अमीर, पतन, देवता, सजीव, विष, निर्जीव

प्रश्न-8(क) निम्नलिखित शब्दों में 'ता' प्रत्यय जोड़कर भाव वाचक संज्ञा बनाइए—

मित्र, सुन्दर, शत्रु, मधुर, दयालु

(ख) निम्नलिखित उपसर्गो से एक-एक शब्द बनाइए—

उप, अप, वि, अनु

प्रश्न-9 भाई-बहन कहानी का सारांश लिखिए।

प्रश्न-10 'जल ही जीवन है' विषय पर 100 शब्दों में एक निबंध लिखिए।

❑❑